विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं समस्याएँ एक अध्ययन

रश्मि कुमारी राजौरा*

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता है। इन्हीं सरोकारों को इतिहास विषय में सहजता से समावेश कर पढ़ाया जाता है। क्योंकि इतिहास दुनिया की भूतकाल में घटित घटनाओं का अध्ययन है। इसलिए शिक्षा के द्वारा ऐसे प्रयास होने चाहिए कि इतिहास विद्यार्थियों को विश्व में होते रहे बदलावों और निरंतरता की प्रक्रियाओं को खोज करने में सक्षम बनाए। क्योंकि इतिहास वर्तमान और भविष्य की नींव है। इतिहास विषय का अध्ययन विद्यार्थी को इतना सक्षम बनाता है कि वह अतीत और वर्तमान में अंतर स्पष्ट करने व उसमें सुधार करने के योग्य हों। इस शोध पत्र में शोध अध्ययन 'माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों और अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' दिया गया है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की इतिहास विषय के अध्ययन और अध्यापकों की इतिहास शिक्षण से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना था। इस शोध अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक एवं मात्रात्मक और इसमें प्रतिदर्श के रूप में नई दिल्ली के दक्षिण एवं उत्तर जिले के माध्यमिक विद्यालयों का यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया तथा इन चयनित विद्यालयों से वर्ष 2020-21 में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों एवं कार्यरत 25 अध्यापकों का चयन किया गया। इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए स्व-निर्मित अभिवृत्ति मापनी एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। इस शोध अध्ययन के परिणामों में पाया गया कि इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों और अध्यापकों की सकारात्मक अभिवृत्ति है, किंतु विद्यार्थियों में उपयुक्त सहायता एवं मार्गदर्शन न मिलने के कारण उनमें इतिहास विषय की जागरूकता का अभाव है। अध्यापकों को इतिहास शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए कार्यशालाओं, सेमिनारों आदि में भाग लेना चाहिए। साथ ही, शिक्षण के नए तरीकों व पद्धतियों को सीखना व कक्षा में अपनाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों को कक्षा की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान सक्रिय रखने में मदद मिले सके और उनमें विषय की समझ विकसित हो सके।

इतिहास हमारे संसार में घटित हुई घटनाओं एवं समाज कैसे विकसित हुआ? अतीत में ऐसे कौन-कौन बदलावों से परिचित कराता है। इतिहास के अध्ययन से कार्य हुए जिनके द्वारा संसार में परिवर्तन आए? से हमें ज्ञात होता है कि संसार की उत्पत्ति कैसे हुई? हम क्या और कौन थे? कहाँ से आए हैं? जीवन की

*कनिष्ठ परियोजना अध्येता, अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110016

शुरुआत कैसे हुई? हम कहाँ रहते थे और अपना जीवन कैसे व्यतीत करते थे? आदि प्रश्नों के संभावित उत्तर या प्रमाण हमें इतिहास विषय के अध्ययन से मिलते हैं। इतिहास के द्वारा हम अपने अतीत से लेकर आज तक की घटनाओं एवं जानकारियों को कालक्रम के अनुसार भी अध्ययन करते हैं। परंतु वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों में कालक्रम के स्थान पर संकल्पना आधारित या 'थीम' आधारित विषयवस्तु रखी गई है।

इतिहास हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को समझने में सहायता प्रदान करता है। इतिहास हमारे अतीत का ज्ञान है, इसमें मुख्यतः व्यक्तियों, समाज, सभ्यताओं, अतीत की समस्याओं एवं समाधानों, लोगों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक गतिविधियों तथा विविधताओं आदि के बारे में अध्ययन किया जाता है (सुमन, गौरव, और शर्मा, 2017)। हम जिस समाज में रहते हैं, हमें उस परिवेश की आदत हो जाती है और हम यह मान लेते हैं कि दुनिया हमेशा ऐसे ही रहती है। हम भूल जाते हैं कि जीवन हमेशा से वैसा नहीं था, जैसे हमें आज दिखता है। इतिहास के आधार पर हम अनुसंधान एवं व्याख्या कर सकते हैं कि किसी घटना का अतीत में क्या प्रभाव पड़ा था, जो हमें वर्तमान में लगभग वैसे ही स्थितियों में निर्णय लेने में सहायक हो सकती है। साथ ही, यह भविष्य को आकार देने में भी सहायक होगी? इतिहास हमें सिखाता है कि जो गलतियाँ अतीत में हो चुकी हैं वह दोबारा न दोहराई जाएँ। साथ ही, उन गलतियों से सीख कर समाज और सभ्यता में सुधार किए जाएँ। इसलिए इतिहास विषय का अध्ययन विद्यार्थी को इतना सक्षम बनाता है कि वह अतीत और वर्तमान में अंतर स्पष्ट कर सके व उसमें सुधार कर सके।

इतिहास का अध्ययन करने पर पाठकों को यह समझने में मदद मिलती है कि इतिहासकार प्राचीन समय के लोगों द्वारा छोड़े गए अवशेषों, सुरागों और चिह्नों का अध्ययन कर तर्कसंगत व्याख्या करते हैं। अतीत का हर अवशेष, जैसे— पत्थर के औजार, पौधों के अवशेष, हड्डियाँ, लिखित सामग्री, चित्र, आभूषण, उपकरण, अभिलेख, सिक्के, इमारतें, मूर्तियाँ और बरतन हमें प्राचीन समय की विरासत के बारे में बताते हैं। इसके साथ ही हमें इतिहास से सिर्फ राजा-रानियों, विजय-पराजय, नीतियों के बारे में ही नहीं बल्कि शिकारियों, कृषकों, शिल्पकारों, व्यापारियों, संतों, धर्मों, आग का आविष्कार, लोहे जैसे अन्य धातुओं के आविष्कारों, तीर्थ यात्रियों, विश्वासों, स्त्रियों एवं पुरुषों के क्रियाकलापों आदि के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

इतिहास केवल एक विषय ही नहीं बल्कि कई विषयों का समावेश है। कुछ इतिहासकार इतिहास को सभी विषयों की आत्मा भी कहते हैं। इतिहास भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, नागरिक शास्त्र, राजनीतिक शास्त्र, साहित्य, कला, पुरातत्व, निर्णयशास्त्र, दर्शन, तर्कशास्त्र तथा प्राकृतिक विज्ञान आदि विषयों की विषयवस्तु को समेकित करता है (ज्योति, 2017 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005)। सामाजिक विज्ञान हमें सामाजिक दुनिया की कार्यप्रणाली समझने में सहायता करता है। ये हमें जीवन के कई पहलुओं के बारे में बताता है।

इतिहास मनुष्य को अतीत व वर्तमान का ज्ञान प्रदान करता है। साथ ही, यह भविष्य निर्माण के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने में भी सहायक है। अतीत की घटनाओं, उपलब्धियों, सफलता-विफलता, उत्कर्ष-अपकर्ष आदि का अध्ययन करके वर्तमान

से सकारात्मक संबंध जोड़कर और भविष्य पर दृष्टि रखकर अनुभवों के आधार पर पूर्वानुमान करने का विषय तथा जीवन के परिवर्तन, अतीत की घटनाओं और विकास के कारकों की जानकारी उपलब्ध कराने वाला शास्त्र ही इतिहास कहलाता है। यह एक ऐसा विषय है जो समाज, सभ्यता, संस्कृति, संस्थाओं और राष्ट्रों का सटीक ज्ञान प्रदान करता है।

इतिहास विषय को लेकर अनेक भ्रांतियाँ हैं। आज अधिकतर विद्यार्थी इतिहास विषय के अध्ययन में अरुचि व्यक्त करते हैं। इस अरुचि का कारण विषयवस्तु को रोचक ढंग से पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण-अधिगम में प्रस्तुत न करना है। चिंता का एक विषय यह भी है कि विद्यार्थी इस विषय को समझने के बजाय रटने पर अधिक ध्यान देते हैं। इस विषय में उन्हें तिथियाँ याद करने में परेशानी आती है और वे सोचते हैं कि अतीत के बारे में जानकर क्या करेंगे? केवल कल के बारे में नहीं है, यह आज के बारे में भी है। जब हम अतीत पर नज़र डालते हैं और हम इतिहास पढ़ते हैं तब हमें ज्ञात होता है कि समाज में बदलाव कैसे आए? और पाते हैं कि आज की आधुनिक दुनिया अनेक सदियों से हो रहे बदलावों का परिणाम है।

लोग तथ्यों से या अतीत से जुड़ी बातों को समझने या जानने के लिए यह खोजने की कोशिश करें कि वास्तविक घटना कैसे घटित हुई? आज हम यहाँ कैसे पहुँचे? हमने अपने आप को वायुयान में या उपग्रहों को ऊपर उड़ाने का प्रबंध कैसे किया? लोगों के बीच सांस्कृतिक विविधता होने के बावजूद वे अनेक भाषाएँ कैसे बोल रहे हैं? जो इतिहास के अध्ययन को रोचक बनाता है। इतिहास ऐतिहासिक मानवीय अनुभवों पर आधारित एक रचनात्मक,

समूह एवं तथ्यों से भरपूर सामग्री प्रस्तुत करता है और अतीत की घटनाओं के माध्यम से व्यक्ति को मार्गदर्शित करता है (मैथ्यूज़, एस., 2016)।

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने इतिहास विषय के महत्व को समझकर अपने प्रतिवेदन में लिखा कि माध्यमिक स्तर पर यथासंभव विश्व इतिहास के संदर्भ में भारत के इतिहास को पढ़ाया जाना चाहिए अर्थात् भारतीय इतिहास को अलग से न पढ़ाकर विश्व के अन्य क्षेत्रों के विकास के संदर्भ में पढ़ाया जाना चाहिए। इतिहासकार रोमिला थापर का मानना है कि मानवीय एवं राष्ट्रीय विरासत को समझने के लिए विद्यार्थियों को इतिहास का ज्ञान देना अत्यंत आवश्यक है। इतिहास विषय के अध्ययन से बालकों को स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के ज्ञान से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है। जिससे वे अपने देश के स्थानीय स्तर के इतिहास को जानते हुए राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के इतिहास को समझ पाते हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के अनुसार इतिहास को इस तरह से पढ़ाया जाना चाहिए कि उसके माध्यम से विद्यार्थियों में अपने विश्व के बारे में बेहतर समझ विकसित हो और वे अपनी उस पहचान को भी समझ सकें जो समृद्ध तथा विविध अतीत का हिस्सा रही है। ऐसे प्रयास किए जाने चाहिए कि इतिहास, विद्यार्थियों को विश्व में हो रहे निरंतर बदलावों और निरंतरता की प्रक्रियाओं की खोज में सक्षम बना पाए और वे यह तुलना भी कर सकें कि सत्ता और नियंत्रण के क्या तरीके थे? और आज क्या है? इतिहास में भारत के अलग-अलग हिस्सों में होने वाले विकास पर ध्यान दिया जाए, जिसमें विश्व के अन्य भागों में हो रहे विकास के भी खंड हों। (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृष्ठ संख्या 59–60)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के द्वारा मूल्यों एवं चरित्र निर्माण के विकास पर विशेष महत्व दिया गया है। यह नीति प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा विद्यालय के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि पूर्ण आत्म-ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्वस्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रों में शिक्षण और शोध के ऊँचे प्रतिमान स्थापित किए थे और विभिन्न पृष्ठभूमि और देशों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था। इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्ता, माधव, पाणिनी, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, मैत्रेयी, गार्गी और थिरुवल्लुवर जैसे अनेक महान विद्वानों को जन्म दिया।

इन विद्वानों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्रों, जैसे— गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और शल्य चिकित्सा, सिविल इंजीनियरिंग, भवन निर्माण, नौकायान-निर्माण और दिशा ज्ञान, योग, ललित कला, शतरंज इत्यादि में प्रामाणिक रूप से मौलिक योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति और दर्शन का विश्व में बड़ा प्रभाव रहा है। वैश्विक महत्व की इस समृद्ध विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए न सिर्फ संरक्षित रखने की ज़रूरत है, बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था द्वारा उस

पर शोध कार्य होने चाहिए, उसे और समृद्ध किया जाना चाहिए तथा नए-नए उपयोग भी सोचे जाने चाहिए। इस प्रकार, अब भारतीय शिक्षा व्यवस्था में किए जा रहे बुनियादी बदलावों के साथ शिक्षार्थी एवं शिक्षकों को मूल्य एवं चरित्र निर्माण की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बढ़ावा देना होगा (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ संख्या 4-5)।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता
कई शोध अध्ययनों में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति और प्रभावी रूप से इतिहास को पढ़ाने के तरीकों को बताया गया है। स्ट्रॉस, वी. (2017) ने बताया कि ऐतिहासिक ज्ञान इक्कीसवीं सदी के लिए शक्तिशाली मुद्दा है, इतिहास का अध्ययन साक्षरता और संवेदनशीलता को विकसित करता है। एकेंगिन, एच. और सेंडेक, एमई. (2017) ने अपने शोध में पाया कि इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों की सकारात्मक सोच है। इतिहास सीखने से उनके जीवन में योगदान मिलेगा, क्योंकि इतिहास विषय अतीत की घटनाओं से संबंधित है। इतिहास पढ़ाने में अध्यापक पारंपरिक तरीकों, जैसे— प्रश्न-उत्तर विधि और व्याख्यान विधि का उपयोग करते हैं। वे विद्यार्थियों के साथ सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने वाली विधियों का उपयोग नहीं करते हैं।

अध्यापकों को पाठ से संबंधित विद्यार्थियों के पूर्व-ज्ञान, सामग्री संप्रेषित करने के निर्देशात्मक तरीकों और संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। सहायक सामग्री, विद्यार्थियों को इतिहास समझाने व पढ़ाने में एक प्रभावी उपकरण का कार्य करती है (बोडु, जी., 2015)। इसलिए अध्यापक जब तक

कक्षा में, मनोरंजक गतिविधियाँ करते हैं तब तक विद्यार्थी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। (एकेंगिन, एच. और सेंडेक, एमई., 2017)।

अधिभारित पाठ्यक्रम, अपर्याप्त मानव और भौतिक संसाधन, विषय के लिए समर्थन की कमी और कक्षाओं में विद्यार्थियों की अत्यधिक संख्या इतिहास के शिक्षण की प्रमुख समस्याएँ हैं (बोडु, जी., 2016)। अध्यापक इतिहास शिक्षण के दौरान प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में तकनीकी संसाधनों की अनुपलब्धता, सहायक सामग्री में कमी, स्कूल के पुस्तकालय में पर्याप्त किताबों की अनुपलब्धता, अपर्याप्त समय और प्रेरणा की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं (डिक्लेमेंटे, एम., 2014)। तकनीकी उपकरणों, जैसे— कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, इंटरनेट और ऑडियो-विजुअल को इतिहास शिक्षण में नियोजित करके विद्यार्थियों में इतिहास विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है। क्योंकि अध्यापकों की इतिहास शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में सकारात्मक धारणा पाई गई (बोडु, जी. और अन्य, 2014)।

इतिहास तथ्यों को एकत्र करने और उनमें सहसंबंध स्थापित करने की क्षमता विकसित करता है, क्योंकि वर्तमान, अतीत का परिणाम है। इस प्रकार, पूरे मानव जीवन का प्रतिनिधित्व इतिहास द्वारा ही किया जाता है (लिंगदोह और अन्य, 2011)। अधिकांश विद्यार्थी इतिहास सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। इसलिए पाठ्यचर्या निर्माता तथा अध्यापकों को भी विचार करना होगा कि इतिहास शिक्षण की प्रभावी विधियों और गतिविधियों को पाठ्यक्रम और पाठ

योजनाओं में कैसे सम्मिलित किया जाए? (नरसिंगप्पा और अन्य, 2016)।

कुछ शोध अध्ययन दर्शाते हैं कि बड़े पैमाने पर विद्यार्थी इतिहास विषय के प्रति उदासीन हैं और वे सामाजिक अध्ययन विषय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण प्रकट करते हैं। जिसका कारण वे विभिन्न स्रोतों एवं संसाधनों की व्यवस्था न होना मानते हैं। इसके अलावा इतिहास से जुड़ी प्रवृत्तियों, जैसे— क्या इतिहास विषय केवल पुरानी घटनाओं के बारे में ही बताता है? इसलिए विद्यार्थी ऊब जाते हैं? या क्या अधिकतर विद्यार्थियों की इतिहास विषय के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति है? या इसके अन्य कोई कारण भी हैं। यह शोध पत्र इन्हीं कारणों पर आधारित शोध अध्ययन पर केंद्रित है। जिसका उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों और अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं समस्याओं का अध्ययन कर उचित समाधान बताना है।

समस्या कथन

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं समस्याएँ— एक अध्ययन

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

अभिवृत्ति

इस अध्ययन में अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति की मानसिक प्रतिक्रियाओं से है, जो उसकी विशेषताओं या अभिलक्षणों को दर्शाती है। यह ऐसी मानसिक स्थिति है, जिसके आधार पर कोई व्यक्ति, घटनाओं, वस्तुओं आदि का मूल्यांकन करता है। व्यक्ति द्वारा किए जा रहे या किए गए कार्य एवं व्यवहार के ढंग/तरीके से उसकी प्रवृत्ति, मत, विचार आदि का पता चलता है।

शोध उद्देश्य

इस अध्ययन के उद्देश्य थे—

1. इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की इतिहास विषय के अध्ययन और अध्यापकों की इतिहास शिक्षण से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति विवरणात्मक थी, जिसमें गुणात्मक एवं मात्रात्मक तथ्य संकलित कर अध्ययन किया गया था। इस शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में नई दिल्ली के दक्षिण एवं उत्तर जिले के माध्यमिक विद्यालयों का यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया था तथा इन चयनित विद्यालयों से वर्ष 2020-21 में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों एवं कार्यरत 25 अध्यापकों का चयन किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा तथ्यों के एकत्रीकरण के लिए स्व-निर्मित अभिवृत्ति मापनी एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया था।

प्रदत्तों का विश्लेषण

इस शोध अध्ययन हेतु संकलित तथ्यों का विश्लेषण आवृत्ति और प्रतिशत विधि द्वारा किया गया था।

परिणामों की व्याख्या

उद्देश्य 1— (क) इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति के मापन हेतु स्व-निर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया था। यह मापनी पाँच आयामों (प्रभावशीलता, अनुदेशात्मक विधियाँ, संसाधनों की उपलब्धता, अभिप्रेरणा तथा रोजगार परिप्रेक्ष्य) पर आधारित थी। इस मापनी में 10 पद सकारात्मक और 10 पद

तालिका 1— विद्यार्थियों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति के पाँच आयामों पर प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण

कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिर्णित	असहमत	पूर्णतः असहमत
क. प्रभावशीलता					
क1. मुझे इतिहास विषय पसंद है, क्योंकि इसे पढ़ना रुचिकर है।	11%	68%	1%	12%	8%
क2. हमें घटनाओं की बहुत-सी तिथियों को याद रखना पड़ता है, जो इतिहास को एक बोझिल विषय बनाता है।	8%	53%	0	33%	6%
क3. इतिहास विषय वास्तविक जीवन के अनुभवों से संबंधित है।	15%	77%	0	7%	1%
क4. विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में भी इतिहास एक महत्वपूर्ण विषय है।	15%	74%	0	10%	1%

ख. अनुदेशात्मक विधियाँ					
ख1. मुझे इतिहास विषय पसंद है क्योंकि अध्यापक हमें इसे कहानी के माध्यम से पढ़ाते हैं।	12%	69%	0	16%	3%
ख2. इतिहास विषय के अध्यापक उत्साह के साथ विषय को पढ़ाने की बजाय समय पर पाठ्यक्रम को पूरा करने पर जोर देते हैं।	13%	60%	3%	20%	4%
ख3. मुझे वीडियो क्लिपिंग या वृत्तचित्र के द्वारा पढ़ाने से इतिहास विषय का अध्ययन करना पसंद है।	15%	75%	1%	9%	0
ख4. इतिहास विषय की स्पष्टता नवीन पद्धतियों पर निर्भर होती है।	9%	72%	5%	11%	3%
ग. संसाधनों की उपलब्धता					
ग1. इतिहास विषय से संबंधित सभी जानकारी निःशुल्क यूट्यूब और गूगल पर उपलब्ध होती है।	11%	79%	2%	8%	0%
ग2. इतिहास विषय में विद्यार्थियों की रुचि का मुख्य कारण विषय का विस्तृत रूप होना है।	12%	64%	5%	16%	3%
ग3. मुझे इतिहास विषय का अध्ययन करना अच्छा लगता है क्योंकि पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार के चित्रों के साथ उल्लेख दिया गया है।	12%	66%	3%	16%	3%
ग4. विद्यालय के पुस्तकालय में इतिहास की अंग्रेजी और हिंदी माध्यम की पुस्तकें आसानी से उपलब्ध होती हैं।	12%	73%	4%	11%	0
घ. अभिप्रेरणा					
घ1. इतिहास विषय प्रोत्साहित करता है कि अतीत में होने वाली घटनाओं और गलतियों से हम भविष्य के लिए सीखें।	16%	75%	0	7%	2%
घ2. इतिहास में कम अंकों की प्राप्ति विद्यार्थी को हतोत्साहित करती है।	15%	60%	0	15%	10%
घ3. इतिहास विषय का अध्ययन करने के लिए क्षेत्र भ्रमण विद्यार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न कर उन्हें उत्साहित करता है।	15%	75%	0	8%	2%
घ4. इतिहास विषय के प्रति अध्यापकों का नकारात्मक व्यवहार विद्यार्थियों के मनोबल को कम करता है।	13%	69%	2%	11%	5%
ड. रोजगार परिप्रेक्ष्य					
ड1. इतिहास विषय में उपाधि लेकर माध्यमिक स्तर, स्नातक स्तर या विश्वविद्यालय स्तर के अध्यापक बनने हेतु इतिहास विषय में अपनी रुचि साझा करते हैं।	16%	68%	6%	10%	0

ड.2. इतिहास विषय के अध्यापक विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में आसानी से उपलब्ध होते हैं।	11%	64%	4%	21%	0
ड.3. हम भविष्य में इतिहास (अध्यापक, पर्यटक मार्गदर्शक, पुरालेखपाल, संग्रहालय का निरीक्षक आदि) के क्षेत्र में जाना पसंद करेंगे।		70%	0	16%	2%
ड.4. विद्यार्थियों को इतिहास विषय से संबंधित व्यवसाय व रोजगार के बारे में ज्यादा जानकारी होती है।	12%	55%	7%	26%	0

नकारात्मक थे। विद्यार्थियों को प्रत्येक पद में पाँच स्तरों पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिर्णित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत में से किसी एक स्तर का चयन करना था। इन स्तरों का सकारात्मक पदों के लिए मान 5, 4, 3, 2 एवं 1 तथा नकारात्मक पदों के लिए मान 1, 2, 3, 4 एवं 5 था।

तालिका 1 में दिए गए आँकड़ों के अनुसार यह ज्ञात होता है कि 79 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना यह है कि इतिहास विषय पढ़ना रुचिकर है, क्योंकि उसमें अतीत की घटनाएँ शामिल होती हैं, जिसके द्वारा ज्ञान में वृद्धि होती है। साथ ही, अतीत की जानकारी से हम अपने वर्तमान एवं भविष्य को सुधार सकते हैं। इतिहास विषय से संबंधित जानकारी निःशुल्क यूट्यूब, इंटरनेट, ई-लाइब्रेरी पर उपलब्ध होती है। इतिहास विषय हमें प्रोत्साहित करता है कि अतीत में होने वाली घटनाओं और गलतियों से भविष्य के लिए सीखें। इतिहास विषय से संबंधित व्यवसाय में रोजगार के बारे में भी विद्यार्थियों को कम जानकारी होती है। हालाँकि वर्तमान युग में इतिहास विषय का अधिक महत्व है, इस विषय में उपाधि लेकर विद्यार्थी, माध्यमिक स्तर, स्नातक स्तर एवं विश्वविद्यालय स्तर के अध्यापक, पर्यटक, मार्गदर्शक, पुरालेखपाल, संग्रहालय का निरीक्षक आदि के रूप में अपनी-अपनी आजीविका का चयन कर सकता है (एकेंगिन, एच. और सेंडेक, एमई, 2017)। इतिहास विषय के अंतर्गत

विद्यार्थी युद्ध, साम्राज्य आदि के बारे में पढ़ने के लिए उत्सुक होते हैं। 39 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया है कि वे इतिहास विषय पढ़ने में रुचि रखते हैं क्योंकि उसमें पुरानी कहानियाँ होती हैं, जो विषय को रुचिकर और आसान बनाती हैं। 61 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि इतिहास विषय में साम्राज्य, शासकों, सभ्यताओं तथा तिथियों आदि को क्रम में याद रखना पड़ता है, जो उसे एक बोझिल और कठिन विषय बनाती है। साथ ही, विद्यार्थियों का मानना है कि इसमें पुरानी घटित घटनाओं की तिथियों के बारे में पढ़ना पड़ता है।

बानवे प्रतिशत विद्यार्थियों का यह भी मानना है कि इतिहास विषय वास्तविक जीवन के अनुभवों से संबंधित है, अगर अध्यापक इतिहास विषय को कहानी, वीडियो क्लिपिंग, वृत्तचित्र आदि के द्वारा पढ़ाएँ तो इतिहास विषय पढ़ना अधिक रुचिकर होगा। विद्यार्थियों ने यह भी बताया कि इतिहास विषय के अधिकतर अध्यापक विषय के विस्तृत रूप के कारण पढ़ाने की बजाय पाठ्यक्रम को पूरा कराने पर जोर देते हैं। 76 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि इतिहास विषय का विस्तृत रूप विद्यार्थियों की अरुचि का मुख्य कारण हो सकता है और इतिहास विषय में कम अंकों की प्राप्ति भी विद्यार्थियों को हतोत्साहित करती है। 18 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि वे भविष्य में इतिहास के क्षेत्र में जाना पसंद नहीं करेंगे। 90 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि क्षेत्र यात्राएँ, कहानी-कथन

विधि, दृश्य सहायता और अन्य ग्राफिक विधियों से इतिहास शिक्षण को अधिक रुचिकर बनाया जा सकता है।

उद्देश्य 1— ख. इतिहास विषय के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति के मापन हेतु स्व-निर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया था। यह मापनी पाँच आयामों (आत्म-प्रभावशीलता,

पेशेवर सहयोग और सहभाजन, शिक्षण अनुभव, शिक्षणशास्त्र विधियाँ और लचीलापन) पर आधारित थी। इस मापनी में 10 पद सकारात्मक और 10 पद नकारात्मक थे। अध्यापकों को प्रत्येक पद में पाँच स्तरों पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिर्णित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत में से किसी एक स्तर का चयन करना था। इन स्तरों का सकारात्मक पदों के लिए मान 5, 4, 3, 2 एवं 1 तथा नकारात्मक पदों के लिए मान 1, 2, 3, 4 एवं 5 था।

तालिका 2— अध्यापकों की इतिहास विषय के प्रति अभिवृत्ति के पाँच आयामों पर प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण

कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिर्णित	असहमत	पूर्णतः असहमत
क. आत्म-प्रभावशीलता					
क1. मैं अपनी इतिहास की कक्षा को रुचिकर बनाने के लिए नए-नए तरीकों और नवीन पद्धतियों का प्रयोग करता/करती हूँ।	10 %	80 %	0	10 %	0
क2. मेरे पास इतिहास विषय का पर्याप्त ज्ञान और कौशल है जो मैं अपने पेशे में बहुत आसानी से अपनाता/अपनाती हूँ।	0	100 %	0	0	0
क3. मैं इतिहास विषय के शिक्षण में निर्धारित समय-सीमा में पाठ्यक्रम पूरा करने हेतु पारंपरिक तरीकों का ज्यादा प्रयोग करता/करती हूँ।	0	90 %	0	10 %	0
क4. मैं जानता/जानती हूँ कि अपने पेशे में प्रभावी रूप से चुनौतीपूर्ण स्थितियों को कैसे संभाला जा सकता है।	20 %	80 %	0	0	0
ख. पेशेवर सहयोग और सहभाजन					
ख1. मैं समय-समय पर होने वाली कार्यशालाओं से जानकारी एकत्रित करके उनका प्रयोग इतिहास कक्षा में करता/करती हूँ।	20 %	50 %	10 %	20 %	0
ख2. मैं अपने इतिहास विषय से संबंधित विचारों को सहयोगियों के साथ साझा करता/करती हूँ।	0	80 %	0	20 %	0
ख3. मैं इतिहास विषय से संबंधित होने वाली कार्यशालाओं और सेमिनारों में सहभागिता करता/करती हूँ।	20 %	60 %	0	20 %	0

ख4. मैं इतिहास विषय की कक्षा की समस्याओं का हल स्वयं ही निकालना उचित समझता/समझती हूँ।	10 %	70 %	0	20 %	0
ग. शिक्षण अनुभव					
ग1. मैं अपने शिक्षण अनुभवों द्वारा वर्तमान और भविष्य में शिक्षण को बेहतर बनाने की कोशिश करता/करती हूँ।	10 %	70 %	0	10 %	10 %
ग2. अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए सामान्यतः अनुशासित कक्षा का होना आवश्यक है।	10 %	50 %	20 %	0	20 %
ग3. मैं अपने इतिहास शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए नई तकनीकों एवं अनुसंधान विधियों का निरंतर अध्ययन और सहायक सामग्री का उपयोग करता/करती हूँ।	10 %	60 %	0	10 %	20 %
ग4. मेरे अनुभवों के अनुसार विभिन्न प्रांतों से आने वाले विद्यार्थियों को एक ही भाषा में शिक्षण देना उचित है।	10 %	40 %	10 %	30 %	10 %
घ. शिक्षणशास्त्र विधियाँ					
घ1. इतिहास विषय के सभी अध्यापकों को इतिहास से संबंधित नवीन अनुसंधानों से परिचित होना चाहिए।	20 %	70 %	0	10 %	0
घ2. ऐसे विद्यार्थी जिन्हें सीखने में कठिनाई होती है या जो जल्दी सीख जाते हैं, ऐसे विद्यार्थियों को मैं अलग-अलग गतिविधि व कार्य देता/देती हूँ।	30 %	50 %	10 %	10 %	0
घ3. मैं अपनी इतिहास की कक्षा में विद्यार्थियों को विषय/पाठ की विस्तृत जानकारी साझा करता/करती हूँ।	10 %	90 %	0	0	0
घ4. मैं विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में बाधा डालने के कारण अधिक समय व्यर्थ कर देता/कर देती हूँ।	0	30 %	0	60 %	10 %
ङ. लचीलापन					
ङ1. मैं इतिहास की कक्षा में अतीत की घटनाओं को वर्तमान और अपने अनुभवों से जोड़कर विद्यार्थियों को उनके विचार प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित/अवसर प्रदान करता/करती हूँ।	20 %	60 %	0	10 %	10 %
ङ2. विद्यार्थियों द्वारा सीखने के प्रतिफल प्राप्त न करने पर उन्हें सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने तक निरंतर प्रशिक्षण करती हूँ/करता हूँ।	10 %	40 %	10 %	40 %	0
ङ3. मैं अपनी इतिहास विषय की कक्षा में पढ़ाने के लिए हमेशा तत्पर रहता/रहती हूँ।	0	90 %	0	10 %	0
ङ4. किसी भी परिस्थिति में, मैं अपने सिद्धांतों से हटकर विद्यार्थी को पढ़ाना पसंद नहीं करती/करता हूँ।	10 %	60 %	10 %	20 %	0

तालिका 2 के आँकड़ों से ज्ञात होता है कि 90 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि वे अपनी इतिहास की कक्षा को रुचिकर बनाने के लिए नए-नए तरीकों, जैसे— समूह-चर्चा, फील्ड विजिट, ई-सामग्री आदि तथा विद्यार्थियों की सहभागिता-आधारित शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं। वहीं उन्होंने विरोधाभासी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वे इतिहास शिक्षण में पारंपरिक तरीकों, जैसे— व्याख्यान और प्रश्नोत्तर विधि का अधिक प्रयोग करते हैं क्योंकि इतिहास विषय के कई खंड हैं और प्रत्येक को पाठ्यक्रम के अनुसार निर्धारित समय-सीमा में विस्तृत रूप से पढ़ाना संभव नहीं है, जो अध्यापकों की इतिहास विषय के शिक्षण के प्रति द्विधात्मक स्थिति को दर्शाता है। 60 प्रतिशत अध्यापक अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए अनुशासित कक्षा का होना आवश्यक समझते हैं और 70 प्रतिशत अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों को बाधा और उन पर समय व्यर्थ करना समझते हैं। जिसके कारण विद्यार्थी कई बार अपनी समस्याओं को अध्यापक से साझा नहीं कर पाते हैं और गलतियाँ करते हैं। क्योंकि कक्षा का अनुशासित होना विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को नहीं दर्शाता है। जब विद्यार्थियों की समस्याओं का हल नहीं किया जाता है, तो वह गलतियाँ करते हैं और उन्हें दोहराते हैं इसलिए उन्हें यह विषय कठिन और उबाऊ लगने लगता है। 80 प्रतिशत अध्यापक इतिहास विषय की घटनाओं को वर्तमान और अपने अनुभवों से जोड़कर कक्षा में पढ़ाते हैं, जिससे विद्यार्थी घटनाओं में रुचि लेकर विषय

को समझते व पढ़ते हैं एवं अपने विचार भी प्रकट करते हैं। 80 प्रतिशत अध्यापक इतिहास विषय के शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कार्यशालाओं और सेमिनारों में सहभागिता करते हैं और कक्षा में पढ़ाने के लिए तत्पर रहते हैं। अध्यापकों द्वारा निरंतर अपने आप को अद्यतन रखने के लिए पेशेवर विकास कार्यक्रमों में सहभागिता की जाती है। ताकि इतिहास विषय के शिक्षण को रुचिकर बनाया जा सके। 70 प्रतिशत अध्यापक इतिहास शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए विषयवस्तु को नए तरीकों एवं तकनीकों से पढ़ाते हैं।

उद्देश्य 2—अध्यापक और विद्यार्थियों के मध्य इतिहास विषय से संबंधित समस्याओं का अध्ययन
अध्यापक और विद्यार्थियों से इतिहास विषय के शिक्षण-अधिगम से जुड़ी समस्याओं पर साक्षात्कार लिया गया था। इस साक्षात्कार द्वारा प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है—

अध्यापक

साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी में 50 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि विद्यार्थियों को विश्व का इतिहास पढ़ने, समझने एवं याद करने में मुश्किल आती है। साथ ही, इतिहास शिक्षण में साम्राज्यों के नाम व सभ्यताएँ, युद्ध, क्रांतियाँ आदि के बारे में रटना पड़ता है। विद्यार्थी तिथियों को रटने से भ्रमित हो जाते हैं, इसलिए वे तिथियों को रटने की बजाय घटनाओं की बुनियाद को याद करना ज्यादा जरूरी समझते हैं, जैसे— अपने साथियों के जन्मदिन या किसी यादगार तिथि से जोड़कर ऐतिहासिक घटनाओं को याद करते हैं। 70 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि इतिहास

विषय में विद्यार्थियों का मूल्यांकन करते समय कई कठिनाइयाँ आती हैं, जैसे— विद्यार्थियों को इतिहास की घटनाएँ याद न होना एवं मनगढ़ंत कहानियाँ बना कर लिखना, मानचित्र को समझ कर न भरना आदि। क्योंकि इतिहास में घटित घटनाओं के बारे में सटीक उत्तर ही लिखा जा सकता है। 70 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि विद्यालय में इतिहास शिक्षण हेतु कोई भी सहायक सामग्री उपलब्ध नहीं है तथा सहायक सामग्री बनाने में उन्हें अधिक समय लगता है। फिर भी, उनका मानना था कि सहायक सामग्री द्वारा शिक्षण एक प्रभावी तरीका है, जो विद्यार्थियों में रुचि, एकाग्रता, अभिप्रेरणा, उत्साह आदि विकसित करता है। 60 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया कि ऑनलाइन शिक्षण में विद्यार्थियों के पास इंटरनेट न होना व बिजली की उपलब्धता में कमी, तकनीकी संसाधनों की कमी आदि का सामना करना पड़ा।

विद्यार्थी

विद्यार्थियों से साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त जानकारी का विश्लेषण करने पर 52 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि इतिहास विषय में अतीत की घटनाएँ याद रखनी पड़ती हैं जो इतिहास विषय को उबाऊ और कठिन विषय बनाती हैं। किताबों की भाषा भी कठिन होती है और उनमें चित्र स्पष्ट और रंगीन नहीं होते हैं। इतिहास के विस्तृत रूप के कारण कभी-कभी पाठ्यक्रम भी समय पर पूरा नहीं हो पाता है।

अठाइस प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि इतिहास विषय की कक्षा में अध्यापकों द्वारा हस्तलिखित नोट्स प्रदान किए जाते हैं तथा शिक्षण में श्यामपट्ट का प्रयोग किया जाता है। जबकि 64

प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि अध्यापक किताबों में विषयवस्तु को हाईलाइट कर देते हैं और फोटोकापी की गई अध्ययन सामग्री से शिक्षण-अधिगम करते हैं। अध्यापकों का सहायक सामग्री द्वारा न पढ़ाना व पर्याप्त मात्रा में सहायक सामग्री उपलब्ध न होना इतिहास विषय को एक कठिन विषय बनाता है। कुछ उत्तरदाताओं का मानना है कि इतिहास विषय में आकलन के पश्चात अध्यापकों द्वारा कक्षा में चर्चा नहीं की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी पुनः समान गलतियाँ दोहराते हैं। विद्यालयों में सामान्यतः इतिहास के कालांश दोपहर या दोपहर के पश्चात होते हैं, जिसमें अधिकांश विद्यार्थियों की कक्षा में रुचि नहीं रहती है। अधिकांश विद्यार्थियों का मानना है कि सुबह के समय इतिहास विषय का कालांश ज्यादा उचित होता है क्योंकि सुबह के समय अच्छा समझ आता है। उन्होंने बताया कि अध्यापक इतिहास शिक्षण हेतु व्याख्यान और प्रश्नोत्तर विधि का ही प्रयोग करते हैं। जिसके कारण वे कक्षा में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं। 60 प्रतिशत विद्यार्थियों का कहना है कि जब अध्यापक उन्हें प्रौद्योगिकी संसाधनों या सहायक सामग्री का प्रयोग करके पढ़ाते हैं, तो उन्हें ज्यादा समझ में आता है। इसलिए विद्यार्थियों की शिक्षा में गुणवत्ता हेतु *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने शिक्षा के विभिन्न आयामों को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी के प्रयोग व एकीकरण को समर्थन देने एवं अंगीकृत करने पर बल दिया है। विद्यार्थियों ने बताया कि विद्यालय की ओर से हमें शैक्षिक भ्रमण हेतु संग्रहालयों, ऐतिहासिक स्थलों आदि पर नहीं ले जाया जाता है। यदि विद्यालयों द्वारा यह प्रयास किया जाए तो हम स्थलों को देखकर व समझकर उससे जुड़ी

जानकारी को लंबी अवधि तक याद रख सकते हैं या पुरानी वस्तुओं के आधार पर वर्तमान और अतीत में अंतर को स्पष्ट कर सकते हैं।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन के परिणामों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इतिहास विषय के प्रति विद्यार्थियों और अध्यापकों की सकारात्मक अभिवृत्ति है, किंतु विद्यार्थियों को उपयुक्त सहायता एवं मार्गदर्शन न मिलने के कारण उनमें जागरूकता का अभाव है। निष्कर्ष के रूप में यह भी ज्ञात हुआ कि इतिहास विषय का व्यापक स्वरूप भी विद्यार्थियों को ऊबाऊ बनाता है। विद्यार्थी इतिहास विषय में साम्राज्यों, सभ्यताओं व युद्ध क्रांतियों आदि के बारे में पढ़ने व याद रखने के बजाय उन्हें रटते हैं। इस कारण वे परीक्षा में मनगढ़ंत कहानियाँ लिखते हैं, जिसके कारण अध्यापकों को आकलन में समस्या आती है। साथ ही, इतिहास विषय के अधिकांश अध्यापक इतिहास विषय के शिक्षण को रोचक बनाने हेतु अधिक प्रयास करते हैं। अध्यापक नवीन शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करते हैं, वे क्षेत्र भ्रमण, संग्रहालय दर्शन, ऐतिहासिक स्थल भ्रमण आदि का भी आयोजन करते हैं। वे विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान के आधार पर इतिहास की घटनाओं को अनुभवों से जोड़कर पढ़ाते हैं ताकि विद्यार्थियों की विषय के प्रति रुचि विकसित हो सके। साथ ही, विद्यार्थियों को पाठ से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष के रूप में इतिहास विषय के अध्ययन का एक पक्ष यह भी पाया गया कि किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा या संस्थान में प्रवेश की परीक्षाओं में सामान्य ज्ञान के अंतर्गत इतिहास विषय से संबंधित प्रश्न पूछे

जाते हैं, इसलिए विद्यार्थी इस विषय के प्रति अधिक रुचि व्यक्त करते हैं। इतिहास विषय को रुचिकर बनाने के लिए विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को सहभागिता आधारित शिक्षण-अधिगम कराया जाने लगा है। किंतु कुछ अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को किसी विषय में संशय होने पर दोबारा न समझाना तथा कम अंकों की प्राप्ति, उन्हें हतोत्साहित करती है। इसके अलावा, अध्यापकों द्वारा इतिहास विषय के व्यापक स्वरूप के कारण तथा निर्धारित समय में पाठ्यक्रम समाप्त करने हेतु समझाने की बजाए पाठ्यक्रम को पूरा कराने पर अधिक जोर दिया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार हैं—

- विद्यार्थियों को इतिहास विषय की घटनाओं को रटकर नहीं, बल्कि दैनिक जीवन से जोड़कर तथा कहानी के रूप में समझाकर पढ़ाना एवं पढ़ना चाहिए।
- इतिहास विषय से संबंधित अनेक प्रकार की जानकारी निःशुल्क यू-ट्यूब और गूगल पर उपलब्ध हैं। साथ ही विद्यार्थियों को इतिहास विषय को विश्वसनीय स्रोतों से पढ़ना चाहिए। ताकि उन्हें सार्थक व स्पष्ट जानकारी प्राप्त हो सके।
- अध्यापकों को अपने अनुभवों और विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान एवं अनुभवों से जोड़कर पाठ पढ़ाने चाहिए। ताकि विद्यार्थियों को विषय या घटनाओं को रटने पर नहीं बल्कि अपने अनुभवों से जोड़कर एवं समझकर याद रखने में सहायता मिले।

- अध्यापकों को इतिहास विषय को उचित व अच्छी तरह से विद्यार्थियों को समझने में सक्षम बनाने हेतु इतिहास शिक्षण में कहानी कथन विधि, सहायक सामग्री, यात्रा वृत्तांत, ऐतिहासिक स्थल, संग्रहालय, वीडियो क्लिपिंग, क्षेत्र भ्रमण, दृश्य सहायता आदि का उपयोग करना चाहिए।
- अध्यापकों को कार्यशालाओं, सेमिनारों आदि में भाग लेना चाहिए। शिक्षण के लिए नए तरीकों व पद्धतियों को सीखना व कक्षा में अपनाना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों को कक्षा के दौरान सक्रिय रखने में मदद मिले और उनमें विषय की समझ विकसित हो।
- अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को इतिहास विषय से संबंधित व्यवसायों या पेशों के बारे में जानकारी प्रदान करना एवं विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए। ताकि विद्यार्थी इतिहास विषय का अध्ययन कर अपने व्यवसाय एवं रोजगार का उपयुक्त चयन कर सकें।
- इतिहास विषय का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। व्यावसायिक क्षेत्र में भी इतिहास विषय का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रशासनिक सेवाओं में भी विद्यार्थी इतिहास विषय का अध्ययन कर योगदान दे रहे हैं और लोक कल्याण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। पुरातत्व विभाग, पर्यटन, अभिलेखागार, संस्कृति विभाग आदि ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ इतिहास का ज्ञान अत्यंत अनिवार्य है। प्रशासनिक क्षेत्र में मानवीय तथा सामाजिक समस्याओं को समझने तथा उनका समाधान करने में इतिहास सार्थक योगदान देता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इतिहास की अत्यंत उपयोगिता है। स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त इतिहास का विद्यार्थी प्राध्यापक, पुस्तकालय, संग्रहालय, पत्रकारिता तथा पुरातत्व विभाग में उच्च पदों पर सेवाएँ करने का अवसर पाता है।

संदर्भ

- एकेगिन, एच., और एमई. सेंडेक. 2017. ए स्टडी ऑफ स्टूडेंट्स ओपिनियन्स अबाउट हिस्ट्री सबजेक्ट्स इन द सोशल स्टडीज करिकुलम. *जर्नल ऑफ लिटरेचर एंड आर्ट स्टडीज*. वॉल्यूम 7 (10), पृष्ठ संख्या 1347-1353. 24 जून, 2021 को 59967dc529bf8.pdf से पुनः प्राप्त किया गया.
- ज्योति, एम. 2017. उच्च श्रेणी के संबंध में अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च*. 4(15), <https://journals.pen2print.org/index.php/ijr/article/view/12197/11517> से पुनः प्राप्त किया गया.
- डिक्लेमेंटे, एम. 2014. ऐतिहासिक सोच— माध्यमिक शिक्षा कक्षा में इतिहास शिक्षण पर परिप्रेक्ष्य. 15 अप्रैल 2021 को <https://scholarworks.umb.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1075&context=gc> से पुनः प्राप्त किया गया.
- नरसिंगप्पा, एच.एन. और एन. लक्ष्मी. 2016. कर्नाटक के हसन जिले में इतिहास विषय के अध्ययन के लिए हाई स्कूल के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन. *सूचनात्मक और भविष्य अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल*. खंड 3, 11, पृष्ठ संख्या 3981-3988.

- बोडु, जी. 2015. इतिहास में प्रभावी शिक्षण— कला और सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग में इतिहास विद्यार्थी-अध्यापकों के परिप्रेक्ष्य. *मानविकी और सामाजिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल*. वॉल्यूम 3(1), पृष्ठ संख्या 38–51. केप कोस्ट विश्वविद्यालय, घाना. जून, 2021 को <https://www.researchgate.net/publication/279537543.pdf> से पुनः प्राप्त किया गया.
- . 2016. वरिष्ठ उच्च विद्यालयों में इतिहास के शिक्षण में आने वाली समस्याओं के बारे में अध्यापकों की धारणा. *कला और मानविकी के जर्नल*. वॉल्यूम 5, पृष्ठ संख्या 38–48. जून, 2021 को <https://www.researchgate.net/publication/305501536> से पुनः प्राप्त किया गया.
- बोडु और अन्य. 2014. इतिहास के शिक्षण में प्रौद्योगिकी के उपयोग की एक परीक्षा— केप कोस्ट मेट्रोपोलिस, घाना में चयनित वरिष्ठ उच्च विद्यालयों का एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लर्निंग, टीचिंग एंड एजुकेशनल रिसर्च*. वॉल्यूम 8(1), पृष्ठ संख्या 187–214. 24 जून, 2021 को <https://www.researchgate.net/publication/268214933.pdf> से पुनः प्राप्त किया गया.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.
- . *हमारे अतीत-I*. कक्षा 6 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली .
- लिंगदोह, के. 2011. *माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच इतिहास में सीखने की समस्याओं का एक अध्ययन*. पृष्ठ 181. मावकीरवाट ब्लॉक पश्चिम खासी हिल्स मेघालय, शिक्षा विभाग.
- सुमन, गौरव और रमाकांत शर्मा. 2017. इतिहास शिक्षण की आवश्यकता, अवधारणा, उद्देश्य, महत्व एवं उपादेयता एक अध्ययन. *जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन अलाइड एजुकेशन*. अंतरराष्ट्रीय मानक क्रम संख्या 2230–7540, वॉल्यूम 13. 6 दिसम्बर, 2021 को <https://ignited.in/1/a/252546> से पुनः प्राप्त किया गया.
- स्ट्रॉस, वी. 2017. *इतने सारे विद्यार्थी इतिहास से नफरत क्यों करते हैं और इसके बारे में क्या करना है*. 23 जुलाई, 2021 को <https://www.washingtonpost.com/news/answersheet/wp/2017/05/17/why-so-many-students-hate-history-and-what-to-do-about-it/> से पुनः प्राप्त किया गया.